ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December- 2017
Innovation The Research Concept

लोगों में प्रचलित अन्धविश्वास के सन्दर्भ में वैज्ञानिक कारणों का अध्ययन

दीपशिखा पाण्डेय
वरिष्ठ प्रवक्ता,
गृह विज्ञान विभाग
च0 र0 दे0 आर्य महिला पी0 जी0 कालेज,
गोरखपुर

सरिता पाण्डेय
छात्रा,
गृह विज्ञान विभाग,
च0 र0 दे0 आर्य महिला पी0 जी0 कालेज,
गोरखपुर

सारांश

भारतीय समाज में अन्धविश्वास अति प्राचीन समय से व्याप्त है। इन अन्धविश्वास के कारण व्यक्तित्व तथा सामाजिक विकास बाधक हो रहा है। अभी भी लोगों का अन्धविश्वास पर विश्वास बना हुआ है जिनका व्यक्ति के जीवन पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से प्रभाव पड़ रहा है। 21वीं सदी में प्रवेश कर चुका मानव समाज जहाँ एक ओर स्वयं को अति आधुनिक मान रहा है, वहीं दूसरी ओर समाज में आज भी तरह–तरह के अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियाँ जड़ जमाये हुए है। मानव सभ्यता के आरम्भिकचरण में मनुष्य को विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं जैसे–सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, भूकम्प, मनुष्य व पशुओं को होने वाली बीमारियों के सम्बन्ध में कोई वास्तविक जानकारी नहीं थी और न ही इन आपदाओं के पूर्वानुमान लगाने ,महामारियों से बचाव व नियन्त्रण के लिए साधन ज्ञात थे, इसलिए उन्हें देवी शक्तियों का प्रकोप माना जाता रहा, जिन्हें शांत करने के लिए विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान बनाये गये। आज भले ही आधुनिक युग में शिक्षा का प्रचार–प्रसार बढ़ गया है तथा शिक्षा के प्रभाव के कारण लोगों के मनोवृत्तियों में परिवर्तन भी आया है लेकिन अंधविश्वास जैसी बाते आज भी लोगों के ध्यान केंद्रित का विषय बनी हुई हैं। प्रत्येक अंधविश्वास के पीछे कुछ धार्मिक मान्यताए बनायी गयी है जिसका प्रत्येक व्यक्ति अनिवार्य रूप से पालन करता है। परन्तु यह भी सत्य है कि प्रत्येक मान्यताओं के पीछे कुछ वैज्ञानिक कारण होते है जो हमारे जीवन को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन में लोगो को अंधविश्वास के पीछे छिपे वैज्ञानिक कारणों से अवगत कराने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : वैज्ञानिक, आजादी, सामाजिक

प्रस्तावना

आजादी के छः दशक बाद ही हिन्दुस्तान ने विश्व में अपनी एक अलग पहचान और जगह बनाई है। लेकिन इसके बावजूद आज भी यह मुल्क इण्डिया और भारत में बटा हुआ है। बड़े–बड़े शॉपिंग माल, महंगी लग्जरी गाड़िया, पब और नाइट क्लब की चका–चौंध के साथ आसमान छूती इमारतों से पटे शहरों में जहाँ चमचमाता इंडिया नजर आता है तो वहाँ दूसरी ओर भूख, गरीबी, अशिक्षा और पिछड़ेपन की चादर में ठिठुरते भारत के दर्शन भी होते हैं। विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने के बावजूद यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में अंधविश्वास का बोलबाला है। उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखंड, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में डायन, भूतप्रेत, जादू, टोना और नजर का लगना जैसे टोटका आम जनजीवन का हिस्सा है। ऐसे क्षेत्रों में डाक्टरों से अधिक ओझा, तान्त्रिक आदि की चलती है। एक सर्वे के अनुसार देश के इन क्षेत्रो के 72% ग्रामीण स्थानीय स्तर पर सरकार की ओर से प्रदान स्वास्थ्य सुविधाओं के बावजूद तान्त्रिकों पर अधिक विश्वास करते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं हैं कि तन्त्र विद्या और अंधविश्वास बढ़ने के पीछे सबसे बड़ा कारण शिक्षा की कमी हैं। लेकिन कई बार तन्त्र विद्या पर विश्वास करने वालों में शिक्षित लोग भी नजर आते हैं। ऐसे में समाज की इस बुराई को जड़ से खत्म करने के लिए सबसे जरूरी है जागरूकता को बढ़ावा देना अन्यथा अंधविश्वास की जाल में उलझा भारत 21वीं सदी के इस दौर में विज्ञान में उन्नति करता इण्डिया से बहुत पीछे जाएगा।

विज्ञान और वैज्ञानिक नजरिया के बीच गहरा सम्बंध होता है। लेकिन हमारे देश और समाज में एक अजीब विरोधाभास दिखाई दे रहा है। एक तरफ विज्ञान और टेक्नोलॉजी की उपलब्धियों का तेजी से प्रसार हो रहा है तो दूसरी तरफ के जनमानस में वैज्ञानिक नजरियें के बजाय अंधविश्वास, कट्टरपंथ, रूढ़ियाँ एवं परम्पराएँ तेजी से पाँव पसार रही है। वैश्वीकरण के प्रबल समर्थक

और उससे सबसे अधिक फायदा उठाने वाले तबके ही भारतीय संस्कृति की रक्षा के नाम पर अतीत के प्रतिगामी, एकांगी, और पिछडत्री मूल्य मान्यताओं को महिमामंडित कर रहे हैं। वैज्ञानिक नजरिया, तर्कशीलता, प्रगतिशीलता और धर्म निरपेक्षता की जगह अंधशद्धा संकार्णतो और असहिष्णुता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

अंधविश्वासी लोग खुद पर और अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं करते, वो ये नहीं सोचते कि ये पैसा और सफलता उन्हें उनके कार्यों और योग्यताओं से मिला है बल्कि वो यह सोचते हैंकि इसके पीछे एक कुछ रहस्यमय शक्तियाँ काम कर रही है, निश्चित रूप से यह उनके अन्दर असुरक्षा की भावना उत्पन्न करता है कि पता नहीं कब उनका भाग्य रूक जाय इसलिए वो सफलता के लिए अंधविश्वासी बने रहते है।

अंधविश्वासो का सर्वसम्मत वर्गीकरण सम्भव नहीं है। इसका नामकरण भी कठिन है। पृथ्वी शेषनाग के सर पर स्थित है, वर्षा गर्जन और बिजली इन्द्र की क्रियाएँ हैं, भूकम्प की अधिष्ठात्री एक देवी है, रोगों के कारण प्रेत और पिशाच हैं, इस प्रकार के अंधविश्वासो को प्राग्वैज्ञानिक या धार्मिक अंधविश्वास कहा जा सकता है। दूसरा बड़ा वर्ग अंधविश्वास का मंत्र तन्त्र है। इस वर्ग के भी अनेक उपभेद है मुख्य भेद हैं रोग निवारण, वशीकरण उच्चाटन, मारण आदि। विविध उद्देश्यों के पूर्त्यर्थ मंत्र प्रयोग प्राचीन तथा मध्य काल में सर्वत्र प्रचलित था। मंत्र द्वारा रोग निवारण अनेक लोगों का व्यवसाय था।

अन्धविश्वास के प्रभाव

1. अन्धविश्वासी लोग अपनी स्वतंत्रता नष्ट कर लेते हैं, वो अपनी मर्जी से कोई निर्णय नहीं ले सकते क्योंकि उन्होंने अपने दिमाग को अन्धविश्वास के जेल में बद कर रखा है उन्होंने अपनी बुद्धि को अन्धविश्वास के हाथों बेच दिया है नहीं तो वो अपनी जिन्दगी अन्धविश्वास के बिना और प्रसन्नता से गुजार सकते थे।
2. भारत में लोग विश्वास करते हैं कि चेचक देवी माता का प्रकोप है और दवा इत्यादि से आप इसका कुछ नहीं कर सकते। केवल प्रार्थना और कर्मकाण्ड करिए देवी माता की शांति के लिए।
3. भारत में अकसर डाक्टर क्लीनिक के मुख्य दरवाजे पर बुरी नज़र से बचने का प्रतीक चिन्ह देखेंगे, अस्पताल में आप बोर्ड देखेंगे 'हम सेवा करते, वो ठीक करता है' कितने ही डाक्टर गुरूवार को काम नहीं करते क्योंकि वो मानते हैं कि ये अच्छा दिन नहीं होता और आपको फिर से डाक्टर के पास जाना पड़ेगा अंधविश्वासी लोग दवा और इलाज को भी अंधविश्वास के घेरे में ले जाते हैं।
4. कई खिलाड़ी लोग मानसिक भ्रातियों पर निर्भर हो जाते है, जैसे कि उनकी योग्यता से नहीं बल्कि बस में किसी निश्चित सीट पर बैठने से वो जीतते है, या फिर ये दस्ताने उनके लिए भाग्यशाली हैं, जिनसे उन्होंने गेंद को लपका था न कि उनकी बढ़िया नज़र, सही जगह अथवा प्रशिक्षण जो उन्होंने लिया।
5. अन्धविश्वासी लोग खुद पर और अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं करते, वो ये नहीं सोचते कि पैसा और सफलता उन्हें उनके कार्य और योग्यता से मिला है बल्कि वो यह सोचते हैं कि इसके पीछे कुछ रहस्यमय शक्तियाँ काम कर रही हैं निश्चित रूप से उनके अन्दर असुरक्षा की भावना उत्पन्न करता है कि पता नहीं कब उनका भाग्य रूठ जाये, इसलिए वो सफलता के लिए अन्धविश्वासी बने रहते हैं।
6. कुछ लोग काली बिल्ली को दुर्भाग्यशाली मानने वाले अन्धविश्वास की तो हंसी उड़ाते हैं परन्तु यदि कोई ज्योतिषी उनकी कुण्डली देखकर अशुभ दिन के विषय में चेतावनी दे तो उसे बड़ी गंभीरता से लेते है।

अध्ययन का उद्देश्य

लोगों में प्रचलित अन्धविश्वास के सन्दर्भ में वैज्ञानिक कारणों का अध्ययन' करना।

साहित्यावलोकन

प्रहरीदुर्ग (2002)

"अंधविश्वास, दुनिया के कोने–कोने में फैले हुए है। कभी–कभी तो उन्हें संस्कृति की धरोहर का एक हिस्सा मानकर अनमोल समझा जाता है। या फिर उनको महज जिज्ञासा की नजर से देखा जाता है, और जिन्दगी में रंग भरने के लिए जरूरी समझा जाता है। पश्चिमी देशों में अंधविश्वास को आम तौर पर गंभीरता से नहीं लिया जाता या उन पर पूरी तरह से यकीन नहीं किया जाता है। मगर अफ्रीका जैसे देशो में लोगों की जिन्दगी पर अंधविश्वास की एक मजबूत पकड़ है।"

प्रहरीदुर्ग (2002)

"कई परिवारों में जुड़वाँ बच्चे पैदा होने से लोग बहुत खुश होते है और इसे एक अजूबा समझा जाता है। लेकिन अंधविश्वास इसका कोई मतलब निकाल सकते है। पश्चिम अफ्रीका के कुछ प्रदेशों में जुड़वाँ बच्चों के जन्म पर माना जाता है कि देवताओं ने जन्म लिया है, और उन्हें पूजा जाता है। अगर उनमें से एक या दोनों की मौत हो जाए तब उनकी छोटी–छोटी मूर्तियाँ बनायी जाती है और परिवारवालों को इन मूर्तियों के आगे भोग चढ़ाना पड़ता है। मगर दूसरी कुछ जगहों पर जुड़वा बच्चे होने पर एक शाप माना जाता है, यहाँ तक कि कुछ माता–पिता उन दोनों में से कम से कम एक ही हत्या कर देते हैं। मगर क्यों? क्योंकि वे मानते हैं कि अगर दोनों जुड़वा बच्चों को जिन्दा छोड़ दिया जाएँ तो वे एक न एक दिन अपने माँ–बाप को मार डालेंगे।"

खुशबू कुमारी (2013)

"विज्ञान के इस युग में हम भले ही अन्तरिक्ष को मुट्ठी में करने ओर चाँद से लेकर मंगल तक घर बसाने की सोच रहे हो। लेकिन इस तरक्की के बावजूद हम मानसिक रूप से अब तक विकास नहीं कर पाए हैं और आज भी अंधविश्वास जैसी सामाजिक बुराईयों के साथ नहीं छोड़ रहे है। अब तो अंधविश्वास के कारण पेड़ पौधों और पर्यावरण को भी नुकसान पहुँच रहा है। जैसे–जैसे विज्ञान तरक्की कर रहा है वैसे–वैसे अंधविश्वास पर भी हमारा विश्वास मजबूत होता जा रहा है। जबकि होना तो यह चाहिए था कि 21वीं सदी में विज्ञान के चमत्कार को नमस्कार किया जाता और हम अंधविश्वास को इतिहास के एक पन्ने के रूप में याद करते।"

राजेन्द्र राठौर (2013)

''सरकार ने जादू टोना के नाम पर प्रताणित होने वाले लोगों को न्याय दिलाने के लिए टोनही प्रताड़ना अधिनियम 2005 लागू किया है, मगर अधिनियम के कायदे और कानून महज किताबों तक ही सीमित है। कानून लागू होने के 6 साल बाद भी लोग उसे मानने को बिल्कुल तैयार नहीं हो रहे है। अंधविश्वास के नाम पर महिलाओं के प्रति बर्बरता में निरन्तर वृद्धि चिंताजनक है। छत्तीसंगढ़ राज्य के अलावा महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल मध्यप्रदेश, असम, गुजरात और बिहार की बात की जाए तो, इन राज्यों में डायन घोषित कर महिला को मार डालना आम बात हो गई है। ऐसी घटनाएँ समूचे ग्रामीणों के सामने घटती है, लेकिन इनमें सबकी सहमति होती है, इस वजह से कोई कानूनी कार्यवाही नहीं हो पाती।''

मनजीत सहगल (2014)

''भारतीय वैज्ञानिकों ने अन्तरिक्ष अनुसंधान में इतनी उन्नति कर ली है कि आज अमेरिका जैसा देश इसका लोहा मानता है, वहीं, दूसरी तरफ देश व समाज अन्तरिक्ष सम्बंधी अंधविश्वासों में उलक्ष कर अपना एक पैर गोबर में ही रखना चाहता है, हमारा समाज सदियों से अंधविश्वासों की बेड़ियों में जकड़ा है।

डॉ0 दिनेश मिश्र (2014)

''21वीं सदी में प्रवेश कर चुका मानव समाज जहाँ एक ओर स्वयं को अति आधुनिक माना है, वहीं दूसरी ओर समाज में आदि काल से तरह–तरह के अंधविश्वास एवं सामाजिक कुरीतियाँ जड़ जमाये हुए है, जो मानव सभ्यता के आरम्भिकचरण में मनुष्य को विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं जैसे–**सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, भूकम्प, मनुष्य व पशुओं को होने वाली बीमारियों के सम्बन्ध में कोई वास्तविक** जानकारी नहीं थी और न इन आपदाओं के पूर्वानुमान लगाने महामारियों से बचाव व नियन्त्रण के लिए साधन ज्ञात नही थे, इसलिए उन्हें देवी शक्तियों का प्रकोप माना जाता रहा, जिन्हें शांत करने के लिए विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान बनाये गये।''

डॉ0 दिनेश मिश्र (2014)

''आजादी के पहले देश में शिक्षा व चिकित्सा सुविधा का प्रसार बहुत कम था। गाँवों, कस्बों में रहने वाले विद्यार्थियों को स्कूल व कालेजों में पढ़ाई करने के लिए कालेजों में पढ़ाई करने के लिए मीलो पैदल चलकर जाना पड़ता था, वही ग्रामीण जगहों पर चिकित्सों सुविधा उपलब्ध न होने से उन्हें मजबूरीवश, झाड, फूंक करने वाले तान्त्रिक के भरोसे रहना पड़ता था। स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का स्तर भी अपेक्षाकृत कम था। आजादी के बाद इन वर्षों में स्थिति सुधरी जरूर है पर वष्रें में स्थिति सुधरी जरूर है पर अब भी पुरानी मान्यताओं के चलते गांव में किसी बच्चे के बुखार आने, उसके लगातार रोने, पेट में दर्द होने, खाना न खाने, नींद न आने जैसी सामान्य बीमारियों को नजर लगने, जादू–टोना से जोड़कर देखा जाता है, और तो और ग्रामीण अपने पालतू दूध न देने जैसी मामलों में भी अंधविश्वास में पड़ जाते है तथा स्वयं के व अपने पालतू पशुओं के उपचार के लिए झाड़–फूक ताबीज बांधने के फेर में समय व धन दोनों नष्ट करते हैं।''

पंकज गोयल (2014)

''हमारे समाज में ऐसी मान्यता है कि यदि कोई मनुष्य किसी सांप को मार दे तो, मरे हुए सांप की आँखों में मारने वाले की तस्वीर उतर आती है, जिसे पहचान कर सांप का साथी उसका पीछा करता है, यह सांपो से जुड़ा ऐसा अंधविश्वास है, जिसका हमारे यहाँ कहानियाँ आर फिल्मों में जमकर इस्तेमाल हुआ है। लेकिन यदि हम बात वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करे तो इसमें तनिक मात्रा में भी सच्चाई नहीं है। सांप अल्प बुद्धि वाले जीव होते हैं। जीव विज्ञान के अनुसार जब सांप मरता है तो वह अपने गुदा–द्वार में एक खास तरह की गंध छोड़ता है जो उस प्रजातिके अन्य सांपो को आकर्षित करती है। इस गंध को सूंघकर अन्य सांप मरे हुए सांप के पास आते हैं, जिन्हे देखकर ये समझ लिया जाता है कि अन्य सांप अपने मरे सांप की हत्या का बदला लेने आया है।''

पंकज गोयल (2014)

''सांपो से जुड़ी हुई हमारी प्रथम मान्यता यह है कि सांप दूध पीते है। यहाँ तक की नाग पंचमी को सांप को दूध पीलाया जाता है। जीव विज्ञान के अनुसार सांप पूरी तरह से मांसाहारी जीव है, ये मेढक, चूहा, पक्षियों के अण्डे व अन्य छोटे–छोटे जीवों को खाकर अपना पेट भरते हैं। दूध इनका प्राकृतिक आहार नहीं है। सांपो को खाली पेट कुछ दिनों तक सपेरे रखते है और फिर उसे दूध देते हैं लेकिन यह कभी–कभी सांप की मौत का कारण भी बन जाता है क्योंकि कई बार दूध सांप के फेफड़ों में घुस जाता है जिससे उसे निमोनिया हो जाता है।''

डॉ0 जाकिर अली रजनीश (2014)

''पिछले पन्द्रह वर्षों से हम ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न अंधविश्वासों, सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अभियान चलाने के लिए गावों में सभाए लेते हैं। जन जागरूकता के कार्यक्रम आयोजत करते है। जादू–टोने के संदेह में होने वाली महिला प्रताड़ना के विरोध में ''कोई नारी टोनही नही अभियान'' चला रहे है। जिन स्थानों पर डायन के संदेह में प्रताड़ना की घटनाएँ होती है वहाँ जाकर उन महिलाओं, उनके परिजनों से मिलते है उन्हें सात्वना देते हैं, उनसे चर्चा करते हैं आवश्यक उपचार का प्रबन्ध करते हैं।''

तमन्ना जटवानी (2015)

''बिल्लियों को हमेशा बुरे संकेत और दुर्भाग्य के तौर पर देखा जाता है। किस्से–कहानियों के साथ–साथ वास्तविक जीवन में भी लोग बिल्ली के दिखने को बुरामानते हैं। बिल्लियों से जुड़ी यह नकारात्मक मान्यताएँ इतनी प्रबल है कि लोग घरों में बिल्ली को पालना भी पसन्द नहीं करते। ऐसा भी माना जाता है कि बिल्ली का घर की चारदीवारी के भीतर मरना या उसे दफनाया जाना बुरी ताकतों को घर में आगमन का मौका देता है।''

अदिति पाठक (2015)

''भारत हमेशा से अंधविश्वासी लोगों की भूमि रही है। हर धर्म, हर संस्कृति और समुदाय में लोगों ने अलग–अलग अंधविश्वासों को जगह दे रखी है। कुछ अंधविश्वासों को वैज्ञानिक कारणों से जोड़कर निभाया जाता है और कद को पुराने रीति–रिवाज मानकर। लेकिन

इन सभी मूर्खतापूर्ण अंधविश्वासों को लोग बड़ी श्रद्धा से निभाते है। देश में आधुनिकीकरण हो चुका है और नई पीढ़ी इन अंधविश्वासों से कुछ दूर दिख रही है लेकिन अभी भी ई छोटे और पिछड़े इलाकों में ये अंधविश्वास माने और निभाएँ जाते हैं।''

समग्री एवं विधि

ताम्रपात्र अर्थात ताँबे के पात्र मेंभोजन नहीं करना चाहिए।

मत

ताम्र पात्र में भोजन करना निषिद्ध माना गया है क्योंकि हिन्दूओं की धर्म मान्यता के अनुसार ताम्रपात्र केवल देवपूजन के प्रयोग के लिये लाया जाता है।

वैज्ञानिक कारण

ताम्र पात्र में जल के अतिरिक्त अन्य पदार्थ रखने पर भोजन और ताँबे के पात्र में रासायनिक अभिक्रिया होने लगती है जिसस पात्र में रखा हुआ भोजन विकृत होने लगता है।

भोजन के उपरान्त घूमना टहलना चाहिए बिस्तर पर लेटकर आराम नहीं करना चाहिए

मत

कुछ लोगों का मानना यह है कि भोजन करने के उपरान्त टहलने से भोजन पच जाता है कुछ का मानना है कि लेटने से भोजन पच जाता है।

वैज्ञानिक कारण

भोजन करने के पश्चात् कम से कम सौ कदम चलना चाहिए यह आवश्यक होता है। चलने से भोजन यदि आहार नली में थोड़ा बहुत फसा भी होता है तो वह आसानी से पेट में पहुँच जाता है जबकि सोने से उसी स्थान पर रूका रह जाता है जिससे आहार नली में कभी–कभी समस्या भी उत्पन्न हो जाती है। भोजन करके तुरन्त सोने से कई प्रकार के रोग उत्पन्न हो सकते है और बैठे रहने से पेट बढ़ जाता है।

बिना स्नान किये भोजन करना अनुचित है

मत

शास्त्र कहता है कि बिना स्नान किये भोजन करना गंदगी खाने के समान होता है। 'अस्थायी समलं भुक्तें।'

वैज्ञानिक कारण

विज्ञान के अनुसार स्नान करने से शरीर के रोम कूपों का सिंचन हो जाता है अर्थात् शरीर से निकले पसीनों से जो पानी की कमी हो चुकी होती है, स्नान करने से उसकी पूर्ति हो जाती है, शरीर में शीतलता और स्फूर्ति आ जाती है। तथा भूखा भी लग जाती है। यदि भूख पहले से लग रही है तो बढ़ जाती है तब भोजन करें। इस तरह भोजन का रस हमारे शरीर के लिए पुष्टिवर्धक सिद्ध होता है। बिना स्नान किये भोजन कर ले तो हमारी जठराग्नि उसे पचाने के कार्य में लग जाती है। उसके बाद स्नान करने पर शरीर शीतल पड़ जाता है और पाचन शक्ति मंद पड़ जाती है जिसका परिणाम यह होता है कि भोजन पूर्ण रूप से नहीं पच पाता और कब्ज अथवा गैस की शिकायत उत्पन्न हो जाती है।

गाय का दूध पवित्र है तो कैसे?

मत

गाय का दूध पवित्र है पौष्टिक एवम् सतोगुण प्रधान गाय का दूध देवताओं को चढ़ाया जाता है।

कारण

गाय के दूध के सेवन से संग्रहणी शोध आदि रोग नष्ट हो जाते हैं यह स्थूलता (मोटापा) और मेदा वृद्धि को भी दूर करता है। इसमें प्रोटीन एवम् विटामिन उचित मात्रा में पाया जाता है जो बालकों के लिए अति उत्तम है। माँ के दूध के बाद डाक्टर बच्चों को गाय का दूध पिलाने की सलाह देते हैं।

ग्रहण के समय बाहर नहीं निकलना चाहिए

मत

राहु का बुरा प्रभाव पडता है।

वैज्ञानिक कारण

सूर्य ग्रहण को नंगी आँखो से देखने पर आँखो के रेटिना पर खतरा पहुँचता है। इससे एक्लिप्स ब्लाइंडनेस भी हो सकता है। इसी कारण सूर्य ग्रहण के समय बाहर नहीं निकलना चाहिए।

आधुनिक युग में चर्म रोग को अभिशाप माना जाता है

मत

चर्म रोग को अभिशाप माना जाता था लोग अंधविश्वास में रहते थे कि यह पूर्व जन्मों का पाप है।

वैज्ञानिक कारण

अनुसंधान के माध्यम से यह पाया गया है कि ऐसा कुछ नहीं है अज्ञानता की कमी के कारण लोगों को खाने से सम्बंधित बीमारियाँ उत्पन्न होती है और अनेक प्रकार के रोग होते है। मांस मछली के साथ दूध का सेवन करने से चर्म रोग होने की सम्भावना होती है।

जनेऊ दाहिनी कान पर लपेटते हैं

मत

लघुशंका या दीर्घशंका के समय जनेऊ को अपवित्र होने से बचाने के लिए उसे खींचकर कानों पर चढ़ाते है। जनेऊ कान पर चढ़ा ......दूर से ही लोग समझ जाते हैं कि ये लघुशंका (Urinal) अथवा दिर्घशंका (Latrine) से आये है और हाथ पैर एवं मुँह का प्रक्षालन नहीं किये हैं।

वैज्ञानिक कारण

दाहिने कान की एक विशेष नाड़ी जिसे आयुर्वेद ने लोहितिका नामक नाड़ी का नाम दिया है यदि उस नाड़ी को दबा दिया जाए तो पूर्ण स्वास्थ्य आदमी को भी पेशाब निकल जाता है। ऐसा क्यों है? इसलिए कि उस नाड़ी का अण्डाकोष से सीधा सम्पर्क होता है। **'हिरणिया'** नामक बीमारी का इलाज करने के लिए डाक्टर लोग दाहिने कान की नाड़ी का छेदन करते है। इस कान को जनेऊ से बांधने का यही अर्थ है कि मूत्र का अन्तिम बूद भी उतर जाए।

माला में 108 मानक का जाप किया जाता है

मत

माला एक पवित्र वस्तु है जो शुद्ध एवं पवित्र वस्तुओं द्वारा बनायी जाती है। इसमें 108 मानके होते है जो साधक को जप संख्या की गणना करने में सहायक होते है। 108 मानको का रहस्य है कि भारतीय मुनियों ने

एक वर्ष में 27 नक्षत्र बतलाए है और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते है। इस प्रकार 27 X 4 = 108 हुए। यह संख्या पवित्र ही नहीं बल्कि अत्यन्त पवित्र मानी जाती है।

वैज्ञानिक कारण

जप करते समय साधकों को होंठ जिह्वा हिलाना पड़ता है। जिस कारण कण्ठ की धमनियाँ प्रभावित होती है और साधक को कण्ठमाला गलगण्ड आदि रोग होने की सम्भावना बन जाती है। ऐसे रोग के होने की सम्भावना से रक्षा (बचाने के) के लिए औषधि युक्त काण्ठ तुलसी रूद्राक्ष आदि की माला धारण करते हैं।

तेल मर्दन ही क्यों घी मर्दन नहीं करते हैं ?

मत

क्योंकि तेल मर्दन से शरीर को शक्ति प्राप्त होती है तेल का भक्षण करने में शक्ति नहीं मिलती जबकि घी को भोजन के रूप में प्रयोग करने से शक्ति मिलती है घी मर्दन से नहीं।

वैज्ञानिक कारण

तेल मर्दन त्वचा रोम छिद्रो को खोल देता है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक लाभप्रद है सिर में नियमित तेल लगाने से बालों का गिरना, सिर दर्द, मस्तिष्क की दुर्बलता आदि स्वतः नष्ट हो जाती है।

उत्तर दिशा में सिर करके सोना नहीं चाहिए

मत

क्योंकि हिन्दूओं की धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मृतक का सिर उत्तर दिशा की ओर रहता है।

वैज्ञानिक कारण

वैज्ञानिक मतानुसार उत्तरीय ध्रुव चुम्बकीय क्षेत्र का सबसे शक्तिशाली ध्रुव है। उत्तरी ध्रुव के तीव्र चुम्बकत्व के कारण मस्तिष्क की शक्ति क्षीण (नष्ट) होती है अतः उत्तर की ओर सिर करके कदापि न सोयें।

मृतक का सिर उत्तर दिशा की ओर रखते हैं

मत

मृत्यु काल के समय मनुष्य (प्राणी) को उत्तर दिशा की ओर सिर करके इसलिए लिटाते हैं कि प्राणें का उत्सर्ग दशम द्वार से हो।

वैज्ञानिक कारण

चुम्बकीय विधुत प्रवाह से उत्तर की दिशा दक्षिण से उत्तर की ओर होता है। कहते हैं कि मरने के बाद भी कुछ क्षणों तक प्राण मस्तिष्क में रहता है। अतः उत्तर दिशा में सिर करने से ध्रुवाकर्षण के कारण शीघ्र निकल जाता है।

हिन्दू स्त्रियाँ मांग में सिन्दूर क्यों लगती है

मत

सिन्दूर को माँग में लगाने से पति की उम्र अधिक दिनो तक रहती है ऐसा हिन्दू धर्म में माना जाता है।

वैज्ञानिक कारण

ब्रम्हरन्ध्र और अध्मि नामक मर्मस्थान के ठीक ऊपर स्त्रियाँ सिन्दूर लगती है जिसे सामान्य भाषा में सीमान्त अथवा माँग कहते है। पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों का यह भाग अपेक्षाकृत कोमल होता है। चूँकि सिन्दूर में पारा जैसी धातु अत्यधिक मात्रा में पायी जाती है जो स्त्रियों के शरीर की विद्युतीय ऊर्जा को नियन्त्रित करता है तथा मर्मस्थल को बाहरी दुष्प्रभावों से बचाता भी है अतः वैज्ञानिक दृष्टि से भी स्त्रियों को सिन्दूर लगाना चाहिए।

कुमकुम का तिलक लगाते हैं

मत

कुमकुम का तिलक किसी पूजा इत्यादि में लगाना शुभ माना जाता है।

वैज्ञानिक कारण

कुमकुम हल्दी का चूर्ण होता है। जिसमें नींबू का रस मिलाने से लाल रंग का हो जाता है आयुर्वेद के अनुसार 'कुमकुम त्वचा शोधन के लिए सर्वोत्तम औषधि है इसका तिलक लगाने से मस्तिष्क तन्तुओं में क्षीणता नहीं आती।

मृतक की अस्थियों को गंगा में डालने का क्या अभिप्राय है?

मत

हिन्दुओं की धार्मिक मान्यता है कि मृतक अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने से मृतक की आत्मा को शान्ति मिलती है।

वैज्ञानिक कारण

वैज्ञानिक परिक्षणों से यह निष्कर्ष मिला है कि आस्थियों (हड्डियों) में फास्फोरस अत्यधिक मात्रा में भूमि पायी जाती है जो खाद रूप में भूमि को उपजाऊ बनाने में सहायक है। गंगा हमारे देश की सबसे बड़ी नदी है इसके जल से भूमि का बहुत बड़ा भाग सिंचित होता है। इसके जल की उर्वरा शक्ति क्षीण न हो इस बचाव के लिए अस्थियाँ प्रवाहित करने की परम्परा वैज्ञानिक सूझ–बूझ से रखी गयी है।

मंदिर में जाने पर धंटी अवश्य बजाना चाहिए

मत

ऐसा माना जाता है कि धंटी बजाने पर भगवान खुश होते है ।

वैज्ञानिक कारण

विज्ञान के अनुसार धंटी बजाने पर धनात्मक वाइब्रेशन होते है जो ध्यान लगाने में मदद करते है। इसके अतिरिक्त यह शरीर में सात केन्द्रों को एक्टिवेट करता है।

चतुर्थी तिथि को चन्द्र–दर्शन की निषिद्धता के पीछे क्या कारण है?

मत

ऐसा माना जाता है कि चतुर्थी तिथि को चन्द्र–दर्शन से भगवान कृष्ण को कलंक लग गया था तभी से चतुर्थी तिथि को चन्द्र–दर्शन करना अशुभ माना जाता है।

वैज्ञानिक कारण

सूर्य चन्द्र की गणना के अनुसार चतुर्थी तिथि के दिन चन्द्रमा ऐसे त्रिकोण पर स्थिर होता है जहाँ से सूर्य की मृत्यु परक किरणें विषैली ही चन्द्रमा पर पड़ती है वैज्ञानिक तथ्यों से यह सिद्ध हो चुका है कि चन्द्रमा स्वतः प्रकाशमान नहीं होता। सूर्य का वहीं मृत्यु परक प्रकाश चतुर्थी को चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी की ओर आता है। इस कारण चतुर्थी को चन्द्रमा नहीं देखना चाहिए।

व्रत उपवास रखने का धार्मिक कारण है

मत

व्रत उपवास रखने से मनोकामना पूर्ण होती है तथा देव गण प्रसन्न होते हैं इस कारण व्रत रखा जाता है।

वैज्ञानिक कारण

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उपवास रखने का कारण यह है कि 'अन्न' में एक प्रकार का नशा होता है, मादकता होती है। भोजन करने के बाद आप स्वयं अनुभव करते होगे कि 'आलस्य' आता है। कभी–कभी पेट में गैस या खट्टी डकार आने जैसा विकार भी उत्पन्न हो जाता है। शरीर के सौष्ठव को बनाये रखने के लिए तथा अन्न की मदकता को कम करने का एकमात्र साधन है उपवास। आज के अत्याधुनिक फैशन परस्पर युग में लोग 'डायटिंग' भी करते है। मोटापा कम करने के लिए भी लोग उपवास व्रत रखते है।

तिलक क्यों लगाते हैं ?

मत

शास्त्रो के अनुसार यदि ब्राह्मण तिलक नहीं लगाता तो उसे **'चाण्डाल'** समझना चाहिए। तिलक धारण करना धार्मिक कार्य माना जाता है।

वैज्ञानिक कारण

जब हम मस्तिष्क से आवश्यकता से अधिक काम लेते हैं तो ज्ञान–तन्तुओं का विचारक केन्द्र भृकुटि और ललाट के मध्य भाग में पीड़ा उत्पन्न हो जाती है। ठीक उस स्थान पर जहाँ तिलक त्रिपुण्ड लगाते हैं। चन्दन का तिलक ज्ञान तन्तुओं को शीतलता प्रदान करता है। जो प्रतिदिन स्नान के बाद तिलक (चन्दर) का लगाता है उसके सिर दर्द की शिकायत नहीं होती है। इस तथ्य को डाक्टर्स एवम् वैध हकीम स्वीकार करते हैं।

क्या गोमूत्र पवित्र है ?

मत

गोमूत्र शुचि (पवित्र) है। उनके मुख का भाग अपवित्र माना गया है किन्तु पीठ के पीछे का भाग पवित्र माना गया है अतः गोमूत्र और गोबर दोनों पवित्र है।

वैज्ञानिक कारण

गोमूत्र में पारद एवं गन्धक के तात्विक गुण अधिक मात्रा में पाये जाते है। गोमूत्र का सेवन करते से प्लीहा और यकृत के रोग नष्ट हो जाते है। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि गोमूत्र कैंसर जैसे रोग को ठीक करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। संक्रमण से उत्पन्न बीमारियाँ भी नष्ट हो जाती है इस तरह यह वैज्ञानिक दृष्टि से पवित्र माना जाता है।

पीपल वृक्ष, पवित्रता के क्या कारण है इसकी पूजा क्यों की जाती है ?

मत

पीपल वृक्ष पर वासुदेव का निवास होता है जिसका पूजा करने से मन को शान्ति मिलती है तथा मनोकामना पूर्ण होती है।

वैज्ञानिक कारण

पीपल ही एक मात्र ऐसा वृक्ष है जो 24 घण्टे (दिन–रात) ऑक्सीजन (0^2) का उत्सर्जन (निर्मलता) करता है। जो जीवधारियों के लिए ''प्राण वायु'' कही जाती है। प्रत्येक जीवधारी ऑक्सीजन लेते हैं और कार्बन–डाई ऑक्साइड (CO^2) छोड़ते है। वैज्ञानिक खोजों में यह तथ्य सिद्ध हो चुका है। ऑक्सीजन (0^2) देने के अलावा पीपल वृक्ष में अन्य विशेषताएँ हैं जैसेः– इसकी छाया सर्दी में ऊष्णता (गर्मी) देती है। और गर्मी में शीतलता देती है। इसके अलावा पीपल के पत्तों से स्पर्श करने से वायु में मिले संक्रामक वायरस नष्ट हो जाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार इसकी छाल पत्रो और फलों आदि से अनेक प्रकार की रोग नाशक दवा बनती है। इस तरह वैज्ञानिक दृष्टि से भी पीपल वृक्ष पूज्यनीय है।

कुश की पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका उंगली से क्यों करते हैं ?

मत

कुश की पवित्री धारण करने का मुख्य कारण आयु वृद्धि और दूषित वातावरण को विनष्ट करना बतलाया गया है।

वैज्ञानिक कारण

कुश नान कन्डक्टर होता है। इसीलिए पूजा–पाठ, जप, होम आदि करते समय कुश का आसन बिछाते हैं और पवित्री स्वरूप हाथ की उंगली में धारण करते हैं जिससे बार–बार हाथ को इधर–उधर करने आदि से भूमि का स्पर्श न हो अन्यथा संचित शक्ति 'व्यर्थ' होकर पृथ्वी में चली जायेगी। अगर भूलवश हाथ पृथ्वी पर पड़ भी जाये तो भूमि से कुश का ही स्पर्श होगा।

तुलसी पूजन क्यों करते हैं इसकी अवधारणा क्या है?

मत

तुलसी की पूजा कार्तिक मास में किया जाता है। तुलसी की पूजा करने में लोगों को अनेक प्रकार की कामनाएँ मिलेगी।

वैज्ञानिक कारण

तुलसी की पत्तियों में संक्रामक रोगों को रोकने की अद्भुत शक्ति निहित होती है। तुलसी एक दिव्य औषधि का वृक्ष हैं। इसके पत्ते उबालकर पीने से सर्दी, जुकाम, खाँसी एवम् मलेरिया से तुरन्त राहत मिलती है। तुलसी कैंसर जैसे भयानक रोग को भी ठीक करने में सहायक है। अनेक औषधि गुण होने के कारण इसकी पूजा की जाती है।

हिन्दू धर्म में स्त्रियों को आभूषण पहनना शुभ माना जाता है?

मत

ऐसा माना जाता है कि सुहागिनो को आभूषण पहनना चाहिए।

वैज्ञानिक कारण

जैसें कमर में पहने जाने वाली करधनी से रीढ़ की हड्डी कमर और त्वचा से सम्बंधित समस्याओं का समाधान होता है, पाचन तन्त्र सम्बंधी समस्याओं में लाभ पहुँचाता है।

1. हार पहनने से रीढ़ की हड्डी की ऊपरी भाग से सम्बंधित समस्याओं से मुक्ति मिलती है।
2. पैरों में पहने जाने वाली पाजेब से भावात्मक कठोरता में कमी आती है आस पास के लोगों के प्रति लगाव बढ़ता है।

3. अंगूटी पहनने से दाँत, कान, नाक, चेस्ट और अनिद्रा से सम्बंधित दोषों का समाधान होता है।
4. कंगन नाड़ी संस्थान के रक्त के संचार को बढ़ाती है। कंगन चूड़ी सकारात्मक व नकारात्मक शक्तियों के बीच सन्तुलन बनाए रखती है।
5. सोना या पंच धातु का बाजू बन्द पहनने से हार्ट और लीवर सम्बंधी शिकायते में कमी आती है एनर्जी का संचार होता है। स्नायु तन्त्र सम्बंधी समस्याओं में फायदा होता है।

नीम का दातुन क्यों करते हैं ?

मत

नीम का दातुन करने से अनेक प्रकार के लाभ मिलते हैं।

वैज्ञानिक कारण

नीम का दातुन से एक नहीं बल्कि अनेकों लाभ है। प्रथम तो दाँत की सफाई होती है दूसरी लाभ पायरिया जैसे रोगों में नीम की दातुन अति उत्तम औषधि है। नीम की दातुन से अति प्रभावकारी लाभ यह है कि दातुन करते समय जो दातुन का रस पेट में चला जाता है तो आंत में होने वाली कीड़िया (पिन कृमि) मर जाते हैं। उन कीड़ियों के कारण पेट में अनेक प्रकार की विकार उत्पन्न होती है

जैसेः—गैस की समस्या, अपच आदि। अतः नीम का दातुन बहुत ही लाभकारी है।

शंक ध्वनि करने के पीछे क्या रहस्य है?

मत

शंक ध्वनि करने से जहाँ तक शंक ध्वनि पहुचता है वहाँ तक का वातावरण पवित्र हो जाता है।

वैज्ञानिक कारण

शंक ध्वनि करने वाले व्यक्ति को दमा की बीमारी, श्वास रोग, फेफड़ो का रोग इन्फ्लूएंजा आदि नहीं होता। यदि कोई व्यक्ति बोलने में हकलाता है तो उसे बार—बार शंक फूकने दिया जाय। हकलाना कम हो जायेगा।

दरवाजे पर नीबू मिर्ची लटकाया जाता है

मत

इससे बुरी नजर और अपशगुन दूर होता है

वैज्ञानिक कारण

नीबू में साइटिक एसिड होता है जो कीटनाशक का काम करता है। यह घर में कीडे मकोडो को आने से रोकता है। इसलिए घर में दरवाजे पर नीबू मिर्ची लटकाया जाता है।

शौच एवं लघुशंका के समय क्यों मौन रहना आवश्यक है?

मत

शौच एवं लघुशंका के समय मौन रहना आवश्यक माना जाता है।

वैज्ञानिक कारण

धार्मिक दृष्टि से शौच और लघुशंका (मूत्र उत्सर्जन) के समय मौन रहना चाहिए। वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर शौच एवम् लघुशंका के समय बोलना खासना, हाफना, हानिकारक है क्योंकि मल के दूषित कीटाणु मुख के माध्यम से शरीर में प्रवेश करके आपको रोग ग्रस्त बना सकते हैं।

पूजा के समय आसन बिछाना आवश्यक क्यों माना जाता है?

मत

पूजा करते समय खाली स्थान पर नहीं बैठना चाहिए पूजा करने से पूर्व पहले बैठन के स्थान पर कुछ बिछा ले।

वैज्ञानिक कारण

पूजा पाठ करने से मनुष्य में एक विशेष प्रकार की शक्ति का संचार होता है वह शक्ति 'लीक' होकर 'अर्थ' न हो जाये इसलिए पूजा करने वाले और भूमिक के बीच विद्युत कुचालक के रूप में आसनो का प्रयोग करते हैं हमारे ऋषि मुनियों में कुशासन को तथा व्याघ्रचर्म मृगचर्म को आसनों में सर्वश्रेष्ठ कहा है। आप स्वयं अनेक तस्वीरों में भगवान शिवाजी को ब्राम्हच—आसन पर अवस्था में देख सकते हैं।

सूर्य को अर्ध्य (जल) क्यों देते है ?

मत

सूर्योदय के समय जल अर्पित करना अनिवार्य होता है।

वैज्ञानिक कारण

वैज्ञानिक दृष्टि में असुर कौन है? मनुष्य को प्रताड़ित निमोनिय राजयक्ष्मा आदि रोग जिनको नष्ट करने की दिव्य शक्ति सूर्य की किरणों में होता है। एन्थ्रेक्स के वायरस जो कई वर्षों के शुष्कीकरण से नहीं मरते वे सूर्य की किरणों से एक—डेढ़ घंटे में मर जाते है। हैजा, निमोनिया, चेचक आदि के कीटाणु पानी में डालकर उबालने पर नहीं मरते किन्तु सूर्य की प्रभातकालीन किरणों से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। सूर्य को अर्ध्य देते समय साधक के ऊपर सूर्य की किरण सीधी पड़ती है। शास्त्र अनुसार प्रातः काल पूर्व की ओर मुख करके तथा संध्या के समय पश्चिम की ओर मुख करके जल देना चाहिए। जल के पात्र (लोटे) को छाती के बराबर ऊँचाई रखकर जल गिराये और लोटे के उभरे भाग को तब तक समाप्त हो जाये ऐसा करने से आँखों में मोतियाबिन्द नहीं होता।

नदी या तालाब में सिक्का क्यों फेका जाता है

मत

भाग्य के लिए अच्छा होता है।

वैज्ञानिक कारण

पहले के समय में सिक्के ताबें के बने होते थे । ताबा यदि लम्बे समय तक पानी मे रहे तो पानी में जमें बैक्टिरिया मर जाते हैं तथा ताबा स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।

निष्कर्ष

भारतीय समाज में अंधविश्वास अति प्राचीन से व्याप्त है। ये अंधविश्वास के कारण व्यक्तित्व तथा सामाजिक विकास में बाधक हो रही है। आधुनिक युग में शिक्षा का प्रसार प्रचार बढ़ गया हैं। तथा शिक्षा के प्रभाव के कारण लोगों के मनोवृत्तियों में परिवर्तन तो आया है लेकिन अंधविश्वास जैसी बातों पर अभी भी लोगों का विश्वास बना हुआ है जिनका व्यक्ति के जीवन पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से प्रभाव पड़ता है।

अतः अध्ययन के लिए विभिन्न जगहों, विभिन्न किताबों तथा इन्टरनेट के माध्यम से लोगों में प्रचलित विभिन्न मिथकों को एकत्र किया गया है। तथा इनके आधार पर इन सब मिथकों के व्यक्ति के व्यवहारिक जीवन में पड़ने वाले प्रभावों का अवलोकन कर प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *अंधविश्वास और उनके पीछे छिपे हुए वैज्ञानिक कारण http//wwwjeenaseekho.com*
2. *अंधविश्वास और विज्ञान का भारत http//www.pravakta.com*
3. *भारत में प्रचलित अंधविश्वास और उनके लाजिक whatknowledge.com*
4. *महाजन, पियूष. अंधविश्वास एवं विज्ञान पर निबंध www.essayasinhindi.com*
5. *सिंघल ,विजय ,कुमार .अंधविश्वास विज्ञान एवं हिन्दू घर्म http//readerblog,navbharattimes.2013*
6. *शर्मा ,सुनील. भारत में प्रचलित 10 प्रथाएँ है अंधविश्वास और जानिए उनके पीछे लाजिक whatknowledge.com- 2016*
7. *हमारे अंधविश्वास के पीछे छिपे है कई वैज्ञानिक कारण hindi.khoobsurati.com*
8. *हिन्दू धर्म के 10 विश्वास एवं अंधविश्वास hindi.webdunia.com.himdusuperstition*